Seventeenth Loksabha

an>

Title : Need to observe 3rd January, the birth anniversary of Savitribai Phule as Women Teachers' Day.

डॉ. संघमित्रा मौर्य (बदायूं): महोदय, शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का ही विकास नहीं करती है, बल्कि उसे पुरातन एवं रूढ़ मान्यताओं के गहरे भंवर से निकालकर प्रकाश की ओर भी जाती है । महिलाओं के संदर्भ में शिक्षा की बात हो तो माता सावित्री बाई फुले का नाम आता है । उन्होंने न केवल महिलाओं को पुरातन रूढ़ियों की बेड़ियों से आज़ाद किया वरन् उन्हें एक खुला आसमान दिया, जहां वह अपने सपनों की उड़ान को भर सकीं । उन्नीसवीं सदी से पूर्व तक हमारे ही समाज में स्त्री शिक्षा प्रतिबंधित थी, जो थोड़ी बहुत शिक्षा दी भी जाती थी उसका मुख्य केंद्र परिवार व पाक कला में निपुणता थी । इससे अधिक समाज में स्त्री शिक्षा का कोई व्यवहार नहीं था । कहा जा सकता है कि भारतीय समाज में स्त्री चेतना का स्वर उन्नीसवीं सदी के सुधारवादी आंदोलन से जाना प्रारंभ होता है ।

सावित्री बाई फुले महिलाओं के लिए आशा की किरण थी । महज 66 साल के अपने जीवन में माता सावित्री बाई लाखों महिलाओं के लिए आदर्श और स्वाभिमान का प्रतीक बन गई । आने वाले कई वर्षों तक मां सावित्री बाई फुले को भारत की पहली महिला शिक्षिका के साथ-साथ एक महान समाज सेविका के रूप में याद किया जाएगा ।

पूर्व में मैंने माता सावित्री बाई फुले जी की जयंती को महिला शिक्षिका दिवस के रूप में मनाए जाने की मांग की थी, जिसका जवाब मा. मंत्री जी के द्वारा लिखित रूप से दिया गया कि 5 सितम्बर डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है । इसलिए यह सम्भव नहीं है । महोदय, मैं आपके माध्यम से बताना चाहती हूँ कि मेरी मांग यह नहीं है कि 5 सितम्बर की जगह 3 जनवरी को शिक्षक दिवस मनाया जाए, बल्कि मेरी मांग यह है कि माता सावित्री बाई फुले, जिन्हें आधुनिक भारत में एक ऐसी महिला के रूप में भी श्रेय दिया जाता है, जिन्होंने ऐसे समय में जब महिलाओं को पूर्ण आज़ादी उपलब्ध नहीं थी और वे उप-मानव के अस्तित्व में जी रही थीं तब माता सावित्री बाई फुले ने स्वयं की आवाज को बुलंद किया और महिला अधिकारों के लिये संघर्ष किया ।

आज महिलाएं हर क्षेत्र में आगे हैं और आगे बढ़कर समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज कर रही हैं और यह शिक्षा के माध्यम से ही संभव हो सका है । शिक्षा ने स्त्रियों को उनके अधिकार दिए और उनकी सुरक्षा के लिए बुलंद हौसले दिए । उस माता सावित्री बाई फुले की जयंती 3 जनवरी को महिला शिक्षिका दिवस के रूप में मनायी जाए ।

माननीय सभापति: श्री राहुल कस्वां जी ।

... (व्यवधान)

श्री छतर सिंह दरबार जी ।